चलो, साथ चलें: समावेशन के लिए कुछ रणनीतियाँ

जेन साही और वनमाला विश्वनाथ

इस लेख के द्वारा हम कुछ ऐसी रणनीतियाँ साझा करना चाहते हैं जिन्हें हमने अपनी कक्षा को अधिक समावेशी जगह बनाने के लिए विकसित किया। एम.ए. शिक्षा कार्यक्रम में ये दो कोर्स चलाए जाते हैं: *लैंग्वेज, माइण्ड एण्ड सोसायटी (एल.एम.एस.) और टीचिंग इंग्लिश लैंग्वेज इन इण्डिया (टेली)*। इन दोनों कोर्सों के सन्दर्भ में भाषा के उपयोग के तरीकों की सहायता से हमने अपनी कक्षा में समावेशन का प्रयास किया। हमारे विद्यार्थी विविध भाषायी पृष्ठभूमि वाले थे और अँग्रेजी में उनकी दक्षता का स्तर भी भिन्न–भिन्न था, विशेष रूप से औपचारिक अकादमिक लेखन में। हालाँकि ये विद्यार्थी इस कोर्स को क्रमशः अपने तीसरे और अन्तिम सेमेस्टर में कर रहे थे लेकिन कई विद्यार्थी अँग्रेजी में लेख आदि लिखने में खुद को असमर्थ पाते थे, विशेष रूप से जब उन्हें तर्कपूर्ण और अप्रासंगिक निबन्ध लिखने पड़ते थे। इतना ही नहीं कई विद्यार्थी जब अँग्रेजी में अपने अनुभव या विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते तो उनमें यह भावना आ जाती कि वे अलग–से पड़ गए हैं और यह बात निश्चित रूप से सभी के लिए हानिकारक है। हम इस बात को रेखांकित करना चाहते हैं कि भाषा हमारे विद्यार्थियों की विविधतापूर्ण दुनिया को तो कक्षा में ला ही सकती है, साथ ही एक विशेष "दुनिया", एक विशेष भाषा और उस भाषा का उपयोग करने की एक विशेष शैली का समर्थन भी कर सकती है।

अकसर समावेशन की धारणा का यह अर्थ लिया जाता है कि जो किसी प्रकार की विकलांगता, कमजोरी या कमियों का शिकार होते हैं उन्हें मुख्यधारा में शामिल करना। लेकिन हमने अपने सामान्य शैक्षणिक सन्दर्भ में 'समावेशन' को समझने की कोशिश की है ताकि विद्यार्थियों की ताकत और ऊर्जा, उनकी विविध भाषाओं तथा विश्वविद्यालय के भीतर और बाहर होने वाले उनके विशिष्ट अनुभवों के पूरे दायरे के साथ जुड़ा जा सके। शिक्षकों के लिए यह एक खास चुनौती है क्योंकि उन्हें बड़ी कक्षाएँ सम्भालनी पड़ती हैं जिसमें इस बात का खतरा रहता है कि कहीं विद्यार्थियों को दिए जाने वाले असाइनमेंट यांत्रिक, फीडबैक न्यूनतम और विकल्प सीमित न हो जाएँ।

अब हम तीन परस्पर व्याप्त विचारों का वर्णन करेंगे जिन्हें हमने समावेशन के लिए प्रयोग किया : बहुभाषिकता का एक संसाधन के रूप में प्रयोग; 'पाठ' की व्यापक व्याख्या और आकलन के लिए डिजाइन किए गए अनेक प्रकार के प्रदत्त कार्य असाइनमेंट और प्रस्तुतियाँ। इनके कारण विद्यार्थियों के साथ कोर्स का सह–निर्माण करने में सभी की अधिक भागीदारी और संलग्नता प्राप्त हुई।

एक आवश्यक संसाधन के रूप में बहुभाषिकता

विद्यार्थियों का विभिन्न भाषाओं सम्बन्धी ज्ञान और उसके प्रति आत्मीयता शिक्षण का एक शक्तिशाली संसाधन होता है क्योंकि उसी के जरिए विद्यार्थियों की दुनिया को कक्षा में लाया जा सकता है जिससे नए व पुराने को जोड़ा जा सके। भिन्न–भिन्न भाषाएँ हमारे क्षितिज का विस्तार करती हैं और अगर किसी ज्ञात भाषा को विस्थापित या प्रतिस्थापित कर दिया जाए तो भारी नुकसान होता है। टैगोर के शब्दों में, "भाषा कोई छतरी या ओवरकोट नहीं है जिसे जाने–अनजाने गलती से माँग लिया जाए; यह तो जीवन्त त्वचा की तरह है।"[1]

Canagarajah (2002), एक अपरिचित भाषा के रूप में अँग्रेजी सीखने के लिए विद्यार्थियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली अलग–अलग रणनीतियों के बारे में चर्चा करते हैं। वे *समायोजन* की भावना को जरूरी मानते हैं जिसके तहत विद्यार्थी किसी चीज का हिस्सा बनने का आत्मविश्वास रखता है और जहाँ प्रासंगिक व उपयोगी हो वहाँ उसका

[1] *Tagore R. 1922. 'An Eastern University' in Creative Unity.*

उपयोग भी करता है लेकिन उसके लिए अपनी परिचित भाषा और उसे इस्तेमाल करने के तरीकों को नहीं छोड़ता।[2]

हमारे शिक्षण में अनुवाद का प्रयोग एक सक्रिय साधन के रूप में किया गया जिसकी सहायता से संवाद हो सके, सहयोग प्राप्त किया जा सके और भाषा की परस्पर सम्बद्धता के आधार पर 'भिन्नता' को समझा जा सके।

एल.एम.एस. कोर्स में हमने लोकोक्तियों का प्रयोग किया ताकि इस बात पर गहन चर्चा हो सके कि संस्कृति और भाषा अभिन्न रूप से कैसे जुड़ी हुई हैं। लोकोक्ति का अनुवाद करने के दौरान अर्थ, समान शब्द और तुलना पर गर्मागर्म चर्चा हुई। 'भाषा, सत्ता और समाज' (Language, Power and Society) वाली इकाई पर दिए गए असाइनमेंट में विद्यार्थियों से कहा गया कि वे Bourdieu और Fairclough की सैद्धान्तिक पठन सामग्री में उठाए गए भाषा और सत्ता सम्बन्धी मुद्दों पर चिन्तन करने के लिए अपनी इच्छानुसार किसी भी भारतीय भाषा की कोई कहानी, कविता या आत्मकथात्मक विवरण को चुनें।

भारत और भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में अँग्रेजी भाषा शिक्षण को नया रूप देने के लिए टेली कोर्स ने बहुत महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है, जिसमें एकभाषी परिप्रेक्ष्य से हटकर बहुभाषी प्रतिमान की ओर जाने का प्रयास है। हमारी कक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में अँग्रेजी के शिक्षण में प्रथम भाषा के 'विवेकपूर्ण' उपयोग के बारे में बहुत चर्चा हुई। विद्यार्थियों से कहा गया कि वे ऐसी पाठ योजनाएँ बनाएँ जिनमें कार्य आधारित शिक्षण के अन्तर्गत प्रथम भाषा का *व्यवस्थित* रूप से उपयोग करने का तरीका सुझाया गया हो।

विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें दिए गए पाठ्यों को समझने और उसके साथ जुड़ने में मुश्किल होती है। या तो ये पाठ्य बहुत लम्बे और गहन होते हैं या अपरिचित और जटिल विचारों से भरे होते हैं। ऐसे में पाठ्य के छोटे हिस्सों को चिह्नांकित किया जा सकता है, ऐसी व्यवस्था की जा सकती है जो यह बताए कि इस पाठ्य को क्यों चुना गया और किन मुख्य मुद्दों पर ध्यान देना है तथा साथ ही लेखन का सन्दर्भ दिया जा सकता है ताकि विद्यार्थी उसे उन बातों से जोड़ सकें जिन्हें वे पहले से ही जानते हैं। कुछ पाठ्यों को उससे सम्बन्धित गतिविधि के माध्यम से भी प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए एन. एस. प्रभु की पुस्तक (Second Language Pedagogy, 1987) का एक अध्याय लगभग सभी विद्यार्थियों को तब तक समझ में नहीं आया जब तक उनकी सहायता नहीं की गई। उसे समझाने के लिए 'गतिविधि' की जरूरत पड़ी। लेकिन सभी पाठ ऐसे नहीं होते जिनसे सम्बन्धित व्यावहारिक गतिविधि की जा सके। लेकिन जब कैलेण्डर जैसे परिचित संसाधन की सहायता से द्वितीय भाषा के रूप में कन्नड़ का प्रयोग करके एक पाठ प्रस्तुत किया गया, तब 'कार्य पर आधारित शिक्षण' वाला यह अध्याय विद्यार्थियों को बड़ी आसानी से समझ में आ गया। वनमाला ने विद्यार्थियों के संस्कृत के मौजूदा ज्ञान और कैलेण्डर के कार्य के बारे में साझी धारणा के आधार पर गैर कन्नड़ भाषी विद्यार्थियों के साथ भी कन्नड़ भाषा में प्रभावी तरीके से संवाद किया। इससे विद्यार्थियों को खुद ही पता चल गया कि द्वितीय भाषा सीखने में 'कार्य पर आधारित गतिविधि' की क्या प्रकृति होती है जिसमें व्याकरण सम्बन्धी स्पष्ट शिक्षण, शब्दावली या अभ्यास पर निर्भर हुए बिना भी किसी नई भाषा में संवाद करना सम्भव हो सकता है।

पाठ्य की प्रकृति को पुनः परिभाषित करना

विश्लेषण और चिन्तन के लिए प्रयुक्त सैद्धान्तिक पाठ्यों के अलावा हमने मल्टीमिडिया पाठ्यों का भी इस्तेमाल किया जैसे फिल्में, कविताएँ, अखबार की कतरनें, विज्ञापन, कार्टून, लघुकथाएँ, जीवनी और आत्मकथाएँ। कुछ असाइनमेंट ऐसे भी थे जिनमें बहुत निकट रूप से अवलोकन करने की आवश्यकता थी जैसे मानव जाति व संस्कृति का लघु अध्ययन (mini-ethnographical study) करना या अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर चिन्तन करना।

शैक्षिक सन्दर्भ में व्यक्तिगत विवरणों के समावेशन को सतही, भावनात्मक और तुच्छ मानते हुए अक्सर सन्देह और उपहास की दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन यह एक ठोस और सिद्ध शैक्षिक सिद्धान्त है कि व्यक्तिगत विवरण विद्यार्थियों के वर्तमान ज्ञान को नए अधिगम के साथ जोड़ने में उनकी सहायता करते हैं। जब विद्यार्थियों को इन कथाओं पर एक दर्शक के रूप में चिन्तन करने का मौका मिलता है तो इससे उन्हें अपना विकास करने में मदद मिलती है। अधिक परम्परागत और अप्रासंगिक निबन्ध विद्यार्थियों को मुद्दे से दूर ले जाते हैं और उनके

[2] *A.S. Canagarajah. 2002. Critical Academic Writing and Multilingual Students. The University of Michigan Press. P. 113*

[3] *Rushdie Salman. 1990. One Thousand Years in a Balloon. Viking Children's Books.*

अनुभव तथा मौजूदा ज्ञान को शामिल नहीं करते। सलमान रशदी के अनुसार, "जिनको अपने जीवन पर हावी होने वाली कहानी पर अधिकार नहीं है–उन्हें पुनः कहने, उन पर पुनर्विचार करने, उन्हें खण्डित करने, उन पर हँसने और समय के बदलने के साथ उन्हें बदलने की ताकत नहीं है–वे वास्तव में शक्तिहीन हैं क्योंकि वे नए विचारों के बारे में सोच ही नहीं सकते।"[3]

जब विद्यार्थियों से यह सवाल पूछा गया कि 'अन्य भारतीय भाषा/ओं की तुलना में अपने अँग्रेजी सीखने के अनुभव पर टिप्पणी कीजिए', तो एक छात्रा ने शायद पहली बार उस भाषा के सम्बन्ध में अपनी असुविधा व्यक्त की जिसमें वह सबसे अधिक कुशल है। वह लिखती है, *"मैं जिन छह भाषाओं से परिचित हूँ उनमें से ज्ञान का अत्यधिक प्रकाशन अँग्रेजी के कारण हुआ है। फिर भी मैंने भाषा का इस्तेमाल उधार में लिए हुए साधन की तरह किया है। यह मुझे कभी अपनी नहीं लगी। मैंने हमेशा इसका उपयोग वैसे ही किया जैसा आधिकारिक पदों (शिक्षक, मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा) ने चाहा...अब भी काफी हद तक मेरा मानना है कि (कम से कम जानते–बूझते हुए) मैंने कभी भाषा को अपनी सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल बनाने की कोशिश नहीं की।"*

फिल्म *इंग्लिश विंग्लिश* की समीक्षा लिखते समय एक अन्य छात्रा ने उसे अपने अनुभव के साथ जोड़ा कि कैसे वह भाषाओं की वजह से खुद को हाशिए पर महसूस करती थी। वह लिखती है,

यह फिल्म मूल रूप से गरिमा और सम्मान के बारे में है। वह अँग्रेजी इसलिए नहीं सीख रही थी क्योंकि उसे इसकी जरूरत थी, बल्कि इसलिए सीख रही थी क्योंकि वह अपमान नहीं सह सकती थी। ज्यादातर हम भी ऐसा ही करते हैं। अगर हम अँग्रेजी के सिवाय सात भाषाएँ जानते हैं तो कुछ नहीं लेकिन अगर अँग्रेजी नहीं जानते तो यह बहुत बड़ी बात हो जाती है।

असाइनमेंट के सन्दर्भ में अपने व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य के बारे में लिखना विद्यार्थियों के लिए वाकई एक चुनौती है क्योंकि शैक्षिक अनुशासन का एक अभिन्न हिस्सा यह है कि किसी मुद्दे को सोच–समझकर अलग नजरिए से देखा जाए और दिए गए अभिप्राय से हटकर एक सुविज्ञ, सन्तुलित चर्चा की ओर बढ़ा जाए। इरा शोर निकटता और वस्तुनिष्ठता के बारे में इस प्रकार लिखती हैं–

हम अनुभव से दूर तब होते हैं जब हम उसे परिचित परिवेश से अलग करते हैं और उसका अध्ययन अपरिचित व समीक्षात्मक तरीके से तब तक करते हैं जब तक उसके और समाज के बारे में हमारी धारणा को चुनौती न मिले।

स्कूल के सन्दर्भ में कक्षा के अवलोकन को देखने के अलावा विश्वविद्यालय भी अपने आप में सीखने का एक उपयोगी स्थल हो सकता है। एल.एम.एस. कोर्स में विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के वातावरण में कक्षा के कार्यकलापों के बारे में मानव जाति व संस्कृति सम्बन्धी एक लघु अध्ययन (ethnographical study) करने का विकल्प दिया गया। सम्भवतः कुछ विद्यार्थियों के लिए यह पहला अवसर था जब वे विभिन्न दृष्टिकोणों से कक्षा भागीदारी का विश्लेषण कर रहे थे। एक छात्रा ने खुद की कल्पना एक ऐसी तमिल छात्रा के रूप में की जिसको अँग्रेजी का न्यूनतम ज्ञान है और लिखा,

यदि मैं अँग्रेजी न जानती होती तो क्या मैं अपने प्रोफेसरों और सहपाठियों के साथ बातचीत कर पाती? कक्षा में मूर्ख कहलाने के डर से खुद को धिक्कारती क्योंकि मैं अँग्रेजी में अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाती। यह अनुभव मुझे अजनबी बना देता और मैं जल बिन मछली जैसा महसूस करती। यह सब अपनी संस्कृति वाले किसी व्यक्ति के साथ बात करने जैसा नहीं होता। अगर मुझे अपने विचारों को अर्थ देने के लिए अँग्रेजी को अपनाना पड़ता तो उसके लिए मुझे दुनिया को एक अलग तरह से संकल्पित और अनुभव करने की जरूरत पड़ती।

ऐसे प्रदत्त कार्यों और प्रस्तुतियों को डिजाइन करना जिन्हें करने के लिए विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मुद्दों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के लिए सक्रिय रूप से काम करने की जरूरत पड़े।

असाइनमेंट और फीडबैक के प्रतिमान या पैटर्न अकसर यह संकेतित करते हैं कि वास्तव में किस चीज का मूल्यांकन हो रहा है, इसलिए यह जरूरी है कि समावेशन के सिद्धान्त को वहाँ काम में लाया जाए जहाँ संस्थागत आवश्यकताओं के सन्दर्भ में वह विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण हो।

प्रक्रिया सम्बन्धी पोर्टफोलियो एक ऐसी विधि है जो लिखित असाइनमेंट के लिए एक लचीला साधन मुहैया कराती है

और जिसमें प्रक्रिया और लिखित कार्य दोनों का मूल्यांकन होता है। पोर्टफोलियो कार्य के आकार, शैली और उसकी पूर्णता की दृष्टि से एक व्यापक क्षेत्र प्रदान करता है। इसके अलावा यह आकलन के संचयी और योगात्मक, दोनों तरीकों का समर्थन करता है और विद्यार्थियों को प्रक्रिया का संशोधन करने, सुधार करने तथा समीक्षात्मक रूप से जागरूक होने का अवसर भी देता है।

असाइनमेंट को देखने–सुनने वाले कौन हों: इस बारे में पोर्टफोलियो की एक अलग समझ है जो इसका एक महत्त्वपूर्ण पहलू भी है। आमतौर पर असाइनमेंट पर बिना किसी फीडबैक के ग्रेड दे दिया जाता और बात समाप्त हो जाती है। विचारों का आदान–प्रदान होता ही नहीं। हमने यह सोचा कि विद्यार्थी जो मसौदा बनाते हैं, पहले उस पर विचार–विमर्श किया जाए ताकि ये असाइनमेंट संवाद की शुरुआत बन सकें न कि अन्त।

एक बार तीन विद्यार्थियों से कहा गया कि वे किसी अन्य विद्यार्थी के काम पर विचार–विमर्श करके उसे मौखिक और लिखित रूप में प्रस्तुत करें। अच्छे लेखन के लक्षणों का विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा भी सुझाई गई और विद्यार्थियों से कहा गया कि वे विचारों के विकास, निबन्ध की संरचना, वाक्य प्रवाह, प्रामाणिकता और लेखक की अभिव्यक्ति की शक्ति के साथ में वर्तनी तथा विरामचिह्न जैसी परम्परागत बातों पर भी टिप्पणी दें।

विद्यार्थियों ने एक–दूसरे को काफी हद तक समीक्षात्मक किन्तु सम्वेदनशील और सकारात्मक फीडबैक दिया। इससे विद्यार्थियों को विभिन्न दृष्टिकोणों को सीखने–समझने का अच्छा अवसर मिला और साथ ही इस बात में भी मदद मिली कि अच्छे लेखन का विश्लेषण करने के लिए सुझाई गई रूपरेखा के आलोक में अपने ही काम की समीक्षा कैसे की जाए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को आसान विकल्प देने अथवा विचारों की गम्भीरता या जटिलता को कम करने की बजाय चुनौती देना आवश्यक है। Freire 'सख्ती'[4] को मूल रूप से समझने के विचार पर चर्चा करते हैं। मुक्ति के लिए शिक्षण शास्त्र। सख्ती इस बात में निहित नहीं होती कि अमूर्त विचारों से अलग–थलग रूप में निपटा जाए जो सोच में जागरूकता और गहनता का समर्थन तो करती ही है; साथ ही यह अन्तर–विषयी और बहुपरतीय तरीकों से काम करने के लिए व्यावहारिक कार्य और सिद्धान्त को साथ ले आती है। पाठ्य भिन्न–भिन्न भाषाओं में होने चाहिए, उनमें विविधता होनी चाहिए, वे सुलभ होने चाहिए और विद्यार्थियों द्वारा ही तैयार किए जाने चाहिए ताकि समावेशी कक्षा की स्थापना हो सके।

[4] *Freire P. and Shor I. 1987.A Pedagogy for Liberation. Praeger.*

जेन साही अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु और टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस में अंशकालिक रूप से कार्य करती हैं। **1975** के बाद से उन्होंने बेंगलूरु के बाहरी इलाके के एक अनौपचारिक स्कूल, सीता स्कूल में काम किया है। हाल ही में वे प्रौढ़ शिक्षा के साथ जुड़ी हैं। उनसे jane.sahi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

वनमाला विभवनाथ अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु की फैकल्टी सदस्य हैं। वे भाषा तथा साहित्य की छात्रा रही हैं। वे विश्वविद्यालय में शिक्षा में भाषा की भूमिका से सम्बन्धित विभिन्न कोर्स पढ़ाती हैं। वे कन्नड़ तथा अँग्रेजी भाषा की अनुवादक भी हैं, साथ ही अनुवाद से सम्बन्धित अध्ययनों की अध्येता भी। उनसे vanamala.viswanatha@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल